Chapter 6

bihar board 9 history notes वन्य समाज और उपनिवेशवाद

वन्य समाज और उपनिवेशवाद

महत्त्वपूर्ण तथ्य -वन सम्पदा एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। लगभग बाइस से पच्चीस प्रतिशत भूमि वनों से ढकी है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार इन वनों में भारतीय प्रायद्वीप के मूल निवासी रहा रहते हैं जिसके कारण इन्हें आदिवासी कहा जाता है। आदिवासियों के साथ वनों का महत्वपूर्ण संबंध है। भोजन, ईंधन, लकड़ी, घरेलू सामग्री, जड़ी-बूटी, औषधियों, पशुओं के लिए चारा और कृषि औजारों की सामग्री के लिए ये वनों पर निर्भर रहते हैं। अपनी संस्कृति के अनुसार ये अनेक वृक्षों की पूजा भी करते हैं। भारत में अनेक प्रकार की जनजातियाँ पाई जाती हैं। भारत में भील सबसे बड़ी जनजाति है जो मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक एवं त्रिपुरा राज्यों में पाई जाती है। गोंड इसके बाद की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है जो मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में पाई जाती है। इन्हीं प्रदेशों में अन्य जातियों में उरांव, मीना, मुंडा, खोंड आदि पाई जाती है। अठारहवीं शताब्दी के पहले तक ये जन-जातियाँ अपने जीविकोपार्जन के लिए वन सम्पदा का प्रयोग करते थे। इनका आर्थिक तथा सामाजिक जीवन बड़ा सीध-सादा होता था। लेकिन शताब्दी के अंत तक ये उपनिवेशवाद के शिकार हो गए जिसकी वजह से कई सशस्त्र विद्रोह तथा क्रांतियाँ भी हुईं। बाद में कुछ सुधारात्मक आदेश भी पारित किए गए। आदिवासियों के जीवन के कुछ मुख्य पहलू हैं-

राजनीतिक जीवन-

अठारहवीं शताब्दी में वन्य समाज कबीलों में बँटा हुआ था। कबीले का प्रमुख मुखिया था जिसका मुख्य कर्त्तव्य कबीले को सुरक्षा प्रदान करना था। धीरे-धीरे इन्होंने कबीलों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया तथा अपने लिए कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त कर लिये । परम्परागत जनजातियाँ वैधानिक, न्यायिक तथा कार्यपालिका में विकेन्द्रीकृत थीं। बिहार के सिहभूम में 'मानिकी' व 'मुंडा' प्रणालियाँ और संथाल परगना में 'मांझी' व 'पटगनैत' प्रणालियाँ आज भी प्रचलित हैं। अंग्रेजी शासन के समय अंग्रेजों द्वारा प्रलोभन दिए जाने पर ये मुखिया लोग भी राजस्व वसूलने में अंग्रेजों का साथ देने लगे।

सामाजिक जीवन-

आदिवासी जंगलों से लकड़ी काटते थे, पशुओं का चारा भी जंगल से लेते थे। मनोरंजन के लिए हिरण, तीतर और अन्य छोटे-बड़े पशुओं का शिकार करते थे। नाच और गाना इनका शौक था। महिलाएँ भी जीविकोपार्जन के लिए पुरुषों का हाथ बँटाती थीं। चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को
आज भी सरहुल मनाया जाता है। उपनिवेशवाद की भावना से प्रेरित होकर अंग्रेजी सरकार ने छोटे शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया। उनका मानना था कि बड़े जानवरों को मारकर वे समाज को सभ्य बनाएँगे। फलस्वरूप कई प्रजातियाँ नष्ट होने लगीं। इस प्रकार अंग्रेजों ने सामाजिक जीवन को भ्रष्ट करने की पूरी कोशिश की।

आर्थिक जीवन-

आदिवासियों का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर आधारित था। वे जगह बदल-बदल कर घुमंतू था । झूम विधि से खेती करते थे। जगह बदलने के कारण अंग्रेजों को लगान लगाने तथा उसकी वसूली में परेशानी होती थी। अत: अंग्रेजी सरकार ने इस पर पाबंदी लगा दी। आदिवासी
खेती के अलावा हाथी दाँत, बाँस, मशाले, रेशे, रबर आदि का व्यापार किया करते थे। डायट्रिच बैडिस नामक जर्मन वन विशेषज्ञ ने सन् 1864 में 'वन सेवा' की स्थापना की तथा सन् में भारतीय वन अधिनियम' पारित कर वनों की कटाई पर रोक लगा दिया गया। इससे आदिवासियों का आर्थिक एवं सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ। अंग्रेजी शासन ने राजस्व वसूली के लिए जमींदारी व्यवस्था लागू की। जमींदारों, महाजन तथा साहुकारों द्वारा आर्थिक शोषण की वजह से आदिवासी किसान से मजदूर होते चले गए तथा. इनकी आर्थिक स्थिति बद से बदतर चली

https://www.evidyarthi.in/

गई। कभी-कभी इन्हें खुद को भी गिरवी रखना पड़ता था।
धार्मिक जीवन-अंग्रेजों ने जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश करने की पूरी कोशिश की पर वे सफल नहीं हो सके। फिर उन्होंने शिक्षा देने के बहाने इसाई मिशनरियों की मदद से घुसपैठ करने की कोशिश की। कालान्तर में पादरी आदिवासी धर्म की आलोचना कर उनका धर्म परिवर्तन करवाने लगे। धर्म परिवर्तन के पश्चात उनकी स्थिति में सुधार तो हुआ लेकिन वो अपने अन्य आदिवासियों से घृणा
करने लगे। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा उनके बीच फूट डालने की कोशिश ने आदिवासियों को विद्रोह के लिए भड़काया। इस विद्रोह ने कई क्रांतियों एवं नेताओं को जन्म दिया। उन नेताओं का विश्वास था कि ईश्वर उनके कष्टों को दूर करेगा तथा विदेशियों के शोषण से मुक्त करेगा।

आदिवासियों द्वारा किए गए प्रमुख विद्रोहों-

(i) पहाड़िया विद्रोह-यह जाति युद्धप्रिय थी। इनका निवास स्थान भागलपुर की पहाड़ियों में था। अंग्रेजों ने साहुकारों, ठेकेदारों, राजस्व, वन तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों द्वारा आदिवासियों का शोषण करने के लिए प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप जनजातियों का आर्थिक आधार तहस नहस हो गया। इस विद्रोह का नेता तिलका मांझी था जिसका जन्म 1750 ई. में भागलपुर प्रमंडल स्थित सुल्तानगंज के पास तिलकपुर गाँव में हुआ था। सन् 1779 ई. में उसने पहली बार भू-राजस्व की राशि कम करने तथा किसानों की भूमि छुड़वाने के लिए विद्रोह किया था। भागलपुर के प्रथम कलक्टर अगस्टस क्लेवलैंड पर सशस्त्र प्रहार किया। हिंसात्मक कार्यों एवं अंग्रेज विरोधी नीतियों के कारण सन् 1785 ई. में भागलपुर में बीच चौराहे पर बरगद के पेड़ पर लटका कर फाँसी दे दी गई।
(ii) तमार विद्रोह-सन् 1789 ई० में छोटानागपुर के उरांव जनजाति ने जमींदारों के शोषण के खिलाफ आंदोलन किया जिसे हम तमार विद्रोह के नाम से जानते हैं। यह सन् 1794 तक चलता रहा तथा इसे अंग्रेजों के द्वारा बहुत ही क्रूरतापूर्ण तरीके से दबा दिया। आगे चलकर इनका विरोध मुंडा और संथाल के साथ मिलकर प्रदर्शित किया।
(iii) चेरो विद्रोह-बिहार में पलामू क्षेत्र में रहने वाले चेरो जनजाति के लोगों ने अपने राजा चुडामन राय के खिलाफ विद्रोह किया जिसे चेरो विद्रोह कहते हैं। अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ भूषण सिंह के नेतृत्व में चेर जनजाति के लोगों ने सन् 1800 ई० में खुला विद्रोह किया। मदद के लिए कर्नल जोन्स के नेतृत्व में आई सेना ने इस विद्रोह को दबा दिया और सन् 1802 ई० में भूषण सिंह को फाँसी दे दी गई।
(iv) चुआर विद्रोह-यह जनजाति तत्कालीन बंगाल प्रांत के मिदनापुर, बाँकुड़ा, मानभूम आदि क्षेत्रों में पाई जाती थी। अंग्रेजों की लगान व्यवस्था के खिलाफ मिदनापुर स्थित करणगढ़ की रानी सिरोमणी के नेतृत्व में चुआरों ने विद्रोह का झंडा उठाया। सन् 1798 ई० में यह चरमोत्कर्ष पर था। सरकार ने 6 अप्रैल 1799 को रानी सिरोमणी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आगे चलकर ये लोग भूमिज जाति के साथ हो गए।
(v) "हो" विद्रोह-सन् 1820-21 ई० में छोटानागपुर के सिंहभूम जिले में "हो" जाति के लोगों ने विद्रोह किया था। आगे चलकर ये लोग मुंडा विद्रोह में शामिल हो गए।
(vi) कोल विद्रोह-कोल विद्रोह की शुरुआत छोटानागपुर क्षेत्र में मुंडा, उरांव एवं अन्य जनजातियों के द्वारा 1831 ई० में हुआ। अंग्रेजों की लगान व्यवस्था एवं शोषण की नीति के कारण कोलों के सहयोगी मानकी जमींदार बन बैठे थे तथा उनका आर्थिक तथा सामाजिक शोषण करने
लगे थे। अत: कोलों ने जल्द ही इसके खिलाफ विद्रोह किया।
(vii) भूमिज विद्रोह-सन् 1832 ई. में वीरभूम के जमींदार के पुत्र गंगा नारायण के नेतृत्व में भूमिज विद्रोह की शुरुआत की। अधिक राजस्व के बोझ के कारण इन्होंने भी औपनिवेशिक शासन का विरोध किया था। इन सभी जनजातियों ने सन् 1857 ई. के सिपाही विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
(viii) संथाल विद्रोह-यह विद्रोह बहुत ही महत्वपूर्ण विद्रोह है क्योंकि इसी ने आगे चलकर 1857 ई. की क्रांति को प्रभावित किया था। सन् 1854 ई. आते-आते आदिवासियों नेचिरस्थाई प्रबंध द्वारा अत्यधिक राजस्व वसूली, सामाजिक प्रतिबंध और कई तरह के आर्थिक कष्टं से छुटकारा पाने के लिए कई सभाओं का आयोजन करने लगे। 30 जून 1855 को भगनाडीह गाँव में संथालों की एक सभा आयोजित की गई जिसमें संथालों ने सिद्धू तथा कान्हू

https://www.evidyarthi.in/

के नेतृत्व में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। जुलाई 1855 ई. में स्त्री एवं पुरुषों के आह्वान पर संथालों का विद्रोह आरम्भ हो गया। जल्द ही लगभग 60 हजार हथियारबंद संथालों का विद्रोह आरम्भ हो गया। आदिवासियों के इस तरह के संगठित विद्रोह से अंग्रेज डर गए थे। उन्होंने कलकत्ता तथा पूर्णिया से सेना बुलाकर इस विद्रोह को कुचल डाला। अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

(ix) मुंडा विद्रोह-सन् 1899-1900 में छोटानागपुर में मुंडा आदिवासियों ने उपनिवेशवाद का विरोध बिरसा मुंडा के नेतृत्व में किया। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1874 को पलामू जिले में हुआ। सन् 1895 ई. में उसने अपने-आपको ईश्वर का दूत घोषित कर दिया। उसने मुंडा

जाति के साथ-साथ अन्य जनजातियों में भी जागरूकता पैदा की तथा 25 दिसम्बर, 1899 ई. को ईसाई मशीनरियों पर आक्रमण कर दिया। 8 जनवरी, 1900 ई. को ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह को कुचल दिया।

(x) कंध विद्रोह-इस जनजाति में विपत्ति एवं आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करने के लिए 'मरियाह प्रथा' का प्रचलन था। सन् 1837 ई. में ब्रिटिश सरकार ने इसे रोकने का प्रयास किया जिसका चक्र बिसोई नामक नेता ने इसका विरोध किया। सन् 1857 ई. की क्रांति में कंध आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ सैन्य संचालन किया। उड़ीसा के ही भुइयां एवं जुआंग आदिवासियों ने वहाँ के राजा की सामन्तवादी एवं दमनकारी नीति के खिलाफ आवाज उठाई। भारत के अन्य प्रदेशों में सन् 1879-80 ई. में आंध्र प्रदेश का 'वेट्टी प्रथा' बलात मजदूर प्रथा के खिलाफ विद्रोह किया। परिणामस्वरूप 1935 ई. में जनजाति के लिए शिक्षा और आरक्षण का आदेश पारित किया गया। सन् 1952 ई. में सरकार ने 'नई वन नीति' बनायी। वह वनों की रक्षा तथा आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए उठाया गया। भारत सरकार का महत्त्वपूर्ण कदम है। वन्य जीवन व्यतीत करने वाले औपनिवेशिक शासन से तो मुक्त हो गए लेकिन उपनिवेशवाद से मुक्त होने के लिए किया गया प्रयास अभी भी समाप्त नहीं हुआ है बल्कि उसका स्वरूप बदल गया है। यह अब क्षेत्रवादी आंदोलन में परिणत हो गया है जिसके अन्तर्गत वे लोग अलग राज्य

की मांग करने लगे। भारत सरकार ने उनकी लम्बित मांगों को ध्यान में रखकर एक पृथक राज्य का गठन । नवम्बर 2000 ई. को किया। इसी प्रकार 15 नवम्बर, 2000 को बिहार राज्य का पुनर्गठन करके एक अलग आदिवासी बहुल क्षेत्र झारखंड की स्थापना की।

अत: आदिवासियों द्वारा उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए किया गया प्रयास उनके उत्थान में बहुत सहायक हुआ।

https://www.evidyarthi.in/